Result Mitra Daily Magazine

लेडी ऑफ जस्टिस

➢ हालिया संदर्भ :

- हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने लेडी ऑफ़ जस्टिस यानि न्याय की देवी की एक नई प्रतिमा का अनावरण किया है।
- लेडी ऑफ़ जस्टिस की यह नई प्रतिमा न्यायाधीशों की लाइब्रेरी में लगाई गई है।
- लेडी ऑफ़ जस्टिस की यह नई प्रतिमा 6 फीट ऊंची साड़ी पहने एक महिला की है, जिसके आंखों में पट्टी नहीं है, हाथ में तराजू है और दूसरे हाथ में तलवार की जगह भारत के संविधान की एक प्रति है।
- आमतौर पर लेडी ऑफ जस्टिस की प्रतिमा की आंखों में पट्टी बंधी होती है एवं उनके एक हाथ में तराजू एवं दूसरे हाथ में तलवार होती है, जो दुनिया भर में कानूनी अभ्यास के पर्याय के रूप में जाना जाता है।
- भारत के मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ ने प्रतिमा का अनावरण करते हुए कहा कि आमतौर पर क्लासिक प्रतिपादन में आंखों पर पट्टी बांधने को लोकप्रिय रूप से न्याय की निष्पक्षता का प्रतिनिधित्व करने के लिए समझा जाता है, जबकि बिना आंखों में पट्टी वाली इस नई प्रतिमा का अर्थ है कि कानून अंधा नहीं है और यह सभी को समान रूप से देखता है।
- लेडी ऑफ़ जस्टिस की यह नई प्रतिमा दिल्ली के कॉलेज ऑफ़ आर्ट में पढ़ाने वाले भित्ति चित्रकार विनोद गोस्वामी द्वारा डिजाइन की गई है।

➢ न्याय की देवी यानि लेडी ऑफ जस्टिस का इतिहास :

- विभिन्न इतिहासकारों के अनुसार, लेडी जस्टिस की कल्पना ग्रीक और रोमन पौराणिक कथाओं में मिलती है।
- मौजूदा न्याय की देवी की सबसे सीधी तुलना कई हजार साल पुरानी रोमन न्याय की देवी "जस्टिटिया" से की जाती है।
- ग्रीक कवि हैसियोड के अनुसार, जस्टिटिया जो गैया और यूरेनस में पैदा हुए जो ग्रीस के 12 टाइटंस में एक थे, लगभग 700 ईसा पूर्व पहले न्याय, ज्ञान और अच्छी सलाह के देवी के रूप में जाना जाता था।
- सर्वप्रथम पहले रोमन सम्राट ऑगस्टस (27 ईसा पूर्व–14 ईसा पूर्व) ने पहली बार जस्टिटिया के नाम से जानी जाने वाली देवी की पूजा शुरू की।
- न्याय की देवी की पहली पूजा शुरू होने के समय भी जस्टिटिया की आंखों में पट्टी नहीं थी।

- ऑस्ट्रेलियन लेखक डेसमेंट मेंडरसन की वर्ष 2020 में लिखे एक लेख के अनुसार, आंखों की पट्टी बांधकर न्याय करने वाली पहली ज्ञात छवि का उल्लेख 15वीं शताब्दी में लिखी व्यंगात्मक कविताओं का संग्रह "सेबस्टियन ब्रेंट" में मिलता है।
- विभिन्न इतिहासकारों का यह भी मानना है कि मिस्र की सभ्यता में "लेडी ऑफ जस्टिस" की छवि मिस्र की देवी 'मात' से मिलती-जुलती है।

➢ भारत में "लेडी जस्टिस" :

- भारत में सर्वप्रथम ब्रिटिश शासन में सामान्य कानूनी प्रणाली के साथ-साथ भारत की न्यायपालिका के कामकाज के आधार पर "लेडी जस्टिस" की प्रतिमा की शुरुआत की गई थी।
- भारत में सर्वप्रथम कलकत्ता उच्च न्यायालय में वर्ष 1872 में लेडी जस्टिस की छवि को उकेरा गया था।
- भारत के विभिन्न न्यायालयों में लेडी जस्टिस की प्रतिमा के कुछ मामलों में आंखों पर पट्टी बंधी हुई एवं कुछ मामलों में बिना पट्टी की आंखें दिखाई गई है।
- भारत की आजादी के बाद "लेडी जस्टिस" को उसके प्रतीकों के साथ भारतीय लोकतंत्र में स्वीकृति दी गई।

➢ अन्य देशों में "लेडी ऑफ जस्टिस" :

- पुनर्जागरण (Renaissance) काल के बाद से ही यूरोप के कई गणराज्यों में लेडी ऑफ जस्टिस न्याय की एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में फैल गई।
- वर्तमान में न्याय की देवी की प्रतिमा यूरोप, अफ्रीका, एशिया एवं आस्ट्रेलिया सहित सभी देशों के अदालतों, कानूनी संस्थानों में देखा जा सकता है।
- विश्व के अलग-अलग देशों में लेडी ऑफ़ जस्टिस की प्रतिमा अलग-अलग रूप में खड़ी या बैठी महिला के रूप में देखने को मिलती है, जो आमतौर पर नंगे पैर होती है।

➢ न्याय की देवी के अलग-अलग प्रतीक :

1. **तराजू :–** न्याय की देवी के बाएं हाथ में तराजू निष्पक्षता, कानून का दायित्व एवं समान न्याय का प्रतिनिधित्व करती है।

2. **तलवार :–** न्याय की देवी की दाएं हाथ में तलवार शक्ति और सम्मान का प्रतीक है, जो यह बताती है कि न्याय अपने फैसले पर कायम है।

- लेडी जस्टिस के हाथ में तलवार बिना म्यान की है, जो पारदर्शी होने का प्रतिनिधित्व करती है।

Result Mitra TM

3. **आंखों में पट्टी :–** लेडी जस्टिस की आंखों में पट्टी कानून की निष्पक्षता का प्रतीक के रूप में जाना जाता है।

4. **संविधान :–** लेडी जस्टिस के हाथ में संविधान की प्रति का तात्पर्य है कि भारतीय न्याय प्रणाली भारतीय संविधान के अनुसार संचालित होती है।

Result Mitra